Subject – Sociology
Topic – Social change
Study material for – MDC, SEMESTER-I

सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक क्रांति
Social change and Social revolution

सामाजिक क्रांति, सामाजिक संरचना के पूर्ण परिवर्तन से संबन्धित प्रक्रिया है। कार्ल मार्क्स की पुस्तक "कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो" में क्रांति की चर्चा मिलती है।

मार्क्स के अनुसार, आर्थिक संरचना (अर्थात् उत्पादन के तकनीक, उत्पादन के संबंध आदि) समाज की आधारभूत संरचना (infrastructure) होती है व यह कानून व्यवस्था, सामाजिक (परिवार आदि), राजनीतिक व सांस्कृतिक व्यवस्था (धर्म, विश्वास, नैतिकता आदि) अर्थात् समाज की अधिसंरचना (superstructure) के स्वरूप को निर्धारित करती है। साथ-ही, समय के साथ, उत्पादन की तकनीक में परिवर्तन होते हैं जिससे उत्पादन के संबंधों (अर्थात् संसाधनों के स्वामित्व व श्रम-संबंध आदि) में भी परिवर्तन की आवश्यकता उत्पन्न होती है। लेकिन प्रभुत्वशाली

आर्थिक वर्ग द्वारा अपने निहित स्वार्थों के कारण, इस परिवर्तन का विरोध किया जाता है। परिणामतः शोषित वर्ग इस पतनोन्मुख व्यवस्था को समाप्त कर, स्वयं को विमुक्त करने वाली नवीन व्यवस्था की स्थापना हेतु क्रांति ~~करती है~~। की शुरुआत करते हैं। जिससे आर्थिक संरचना में परिवर्तन होता है व इसके साथ-ही, सामाजिक संरचना भी परिवर्तित हो जाती है।

क्रांति की प्रकृति त्वरित हिंसक व प्रायः हिंसक ~~त्वरित~~ होती है। यद्यपि, भारत में, राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी द्वारा आरंभ की गई क्रांति की भांति यह अहिंसक भी हो सकती है।

लेकिन क्रांति कभी-भी क्रमिक नहीं होती व समाज के सदस्यों को तत्काल ही इसका आभास होता है।

प्रकार्यवादियों द्वारा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में क्रांति की आलोचना की गई है। उनके अनुसार, समाज में पूर्ण परिवर्तन संभव नहीं है व विवाह, परिवार आदि जैसी संस्थाएं समाज में सदैव बनी रहती हैं।